International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 143-145

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 143-145
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 12-07-2020
Accepted: 15-08-2020

डॉ० पुष्पा कुमारी
अतिथि सहायक आचार्या,
कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० पुष्पा कुमारी
अतिथि सहायक आचार्या,
कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा,
बिहार, भारत

वैदिक साहित्य में सूर्य की सार्वदेशिक, सार्वकालिक एवं वैज्ञानिक सत्ता

डॉ० पुष्पा कुमारी

प्रस्तावना

वैदिक साहित्य ज्ञान-विज्ञान का अथाह समुद्र है। इसकी गहराई में अनेकों ज्ञान रूपी माणि-माणिक्य का भंडार है। अतः मनु ने कहा है - "सर्वज्ञानमयो हि स:।" वैदिक काल में जब ज्ञान का अभ्युदय हुआ, तब ऋषि-महर्षियों ने अध्यात्म से लेकर भौतिक विद्या तक का सूक्ष्मरुपेण अध्ययन किया।

तत्पश्चात् दिन-रात की अथक प्रयास से उन्होंने जिस विशिष्ट ज्ञान को प्राप्त किया, वही ज्ञान वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण, आरण्यक के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित हैं। जिनमें ज्ञान-विज्ञान के साथ-साथ ब्रह्माण्ड के न जाने कितने ही अनसुलझे रहस्य वर्णित हैं।

आज के युग में हम ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति से जुड़े कतिपय नए सवालों के समाधान की खोज में सृष्टि के प्रारम्भिक पलों तक जा पहुँचे हैं। जहाँ वैदिक ऋषियों के ज्ञान-विज्ञान की बड़ी जीवन्त तथा सार्थक अनुभूति निहित है। उन्होंने हजारों वर्ष पहले ही पृथ्वी की भौगोलिक स्थिति के बारे में भविष्यवाणी कर दी थी। आकाश-गंगा में कितने ग्रह कहाँ और कितने परिमाण वाले हैं, इन सबकी चर्चा संस्कृत-साहित्य में की गई है। ग्रह शब्द के अतिरिक्त वेदों में रोचन, नक्षत्र, उक्षा जैसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं। तथा नक्षत्र उन तारों को कहते हैं, जो आकाश-गंगा में परस्पर यथावत् अन्तर में दृष्टिगोचर होते हैं। दिन में सूर्य का प्रकाश अधिक होने के कारण सामान्य रूप से ये दृष्टिगोचर नहीं होते है। सूर्य का प्रकाश कम या समाप्त होते ही रात्रि के समय सुदूर आकाश में टिमटिमाते हुए ये नक्षत्रगण दिखाई पड़ते हैं।

सूर्य की सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक सत्ता

वैदिक-साहित्य में सूर्य की सार्वकालिक एवं सार्वदेशिक सत्ता स्वत: सिद्ध है। ऋग्वेद में सूर्य को स्थावर, जंगम अर्थात् सजीव और निर्जीवों की आत्मा कहा गया है।

"सूर्य आत्मा जगतस्यस्युषश्च॥" (ऋ० 1.115.1)

अर्थात् सूर्य ही सम्पूर्ण संसार का प्राणरूप है, ऊर्जा का मूल आधार-स्रोत है।

"सुषुम्न: सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्व:॥" (यजुर्वेद- 18.40)

यजुर्वेद के अष्टादश अध्याय के चालीसवें मन्त्र में स्पष्टरुपेण कहा गया है कि चन्द्रमा सूर्य के सुषुम्न नामक किरणों से प्रकाश ग्रहण करता है।

"यानि नक्षत्राणि दिव्यान्तरीक्षे अप्सु भूमौ यानि नागेषु दिक्षु।
प्रकल्पयंश्चन्द्रमा यान्येति सर्वाणि ममैतानि शिवानि सन्तु॥"
(अथर्व० 19.8.1)

"अष्टाविंशानि शिवानि शग्मानि सह योगम् भजन्तु मे।
योगं प्र पद्ये क्षेमं च क्षेमं प्र पद्ये योगं च नमोऽहोरात्राभ्यामस्तु ॥"
(अथर्व० 19.8.2)

अथर्ववेद में भी इन नक्षत्रों की संख्या अट्ठाईस बताई गई है। ये नक्षत्र द्यूलोक में, अंतरिक्ष में, जलों में, भूमि पर, पर्वतों पर तथा दिशाओं में रहते हैं। अर्थात सर्वत्र ही व्याप्त है।

मत्स्य-पुराण में सर्वत्र सृष्टि-विज्ञान के अंतर्गत सृष्टि-वर्णन के संदर्भ में कहा गया है कि स्वयंभू भगवान ने सुवर्ण एवं रजतमय अण्डे से सूर्य, स्वर्गलोक, भूतल, सम्पूर्ण दिशाएँ, आकाश, पर्वत, मेघमण्डल, नदियाँ, समुद्र तथा देवों की रचना की।

खगोल-विज्ञान के अंतर्गत सूर्य-चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु नामक नवग्रहों के वर्णन के साथ ही तारामण्डल आदि के विषय में भी उल्लेख प्राप्त होता है। इसके अंतर्गत सूर्य और चन्द्रमा का विस्तृतरुपेण उल्लेख है।

"नवयोजनसाहस्त्रे विस्तारो भास्करस्य तु।
विस्तारात् त्रिगुणाश्चापि परिणाहोऽत्र मण्डले॥"
मत्स्यपुराण, अध्याय – 124, श्लोक सं० – 7

अर्थात् सूर्य सातों द्वीपों एवं सातों समुद्रों के विस्तार को समग्र भूतल के अर्द्धभाग को और उसके बाहर के अन्य प्रदेशों को अपने प्रकाश से प्रकाशित करते हैं।

महर्षि यास्क ने भी अपने निरुक्त ग्रन्थ में इसी बात का उल्लेख किया है कि –

"अथाप्यस्यैको रश्मिश्चन्द्रमसं प्रति दीप्यते।
आदित्यतोशष्सय दीप्रिर्भवतीति॥"
(निरुक्त – 2 अध्याय)

अर्थात् सूर्य कि एक किरण चन्द्रमा को प्रकाशित करती है, और यह सूर्य सबको प्रकाशित करता हुआ एक ही स्थान पर रुका हुआ है। उसके चारों ओर ग्रहमण्डल चक्कर काटते रहते हैं।

"स वा एष (आदित्य) न कदाचनास्तमयति, नोदयति" – गोपथब्राह्मण – 2.4.10
अर्थात् सूर्य कभी उदय अथवा अस्त होता ही नहीं है।
"क्षाः कृ शुष्णं परि प्रदक्षिणित्" । ऋक्- 10.22.14
अर्थात् पृथिवी सूर्य के चारों ओर घूमती है। यजुर्वेद में इसी कथन को प्रतिपादित किया गया है।

उपरोक्त संदर्भों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सूर्य अपने स्थान में गति करता है, और पृथिवी उसके चारों ओर भ्रमण करती है। पृथिवी कि गति के कारण दिन और रात का आभास होता है। पृथिवी कि गति के कारण ही सूर्य की उत्तरायण और दक्षिणायन स्थिति होती है। ऋग्वेद में कहा गया है –

"सप्त दिशो नानासूर्याः। देवा आदित्या ये सप्ता॥"
ऋच्क 9.114.3

यजुर्वेद में सूर्य के बारे में लिखित है।
"सूर्य एकाकी चरति॥"
यजु० 23.10

ऋग्वेद में दिव्य ज्योति से प्रकाशमान सूर्य को ऋषियों ने अलग-अलग नामों से विभूषित करते हुए उनकी आराधना की है। यथा- आदित्य, सविता, उषा, अर्यमा, मित्र, वरुण, विष्णु, अग्नि, इन्द्रादि वैदिक देवता उसी के स्वरूप हैं। ऋ० में उद्धृत है –
"प्राणेन विश्वतों वीर्यं देवाः सूर्य समैश्यनं॥ "अर्थात् देवता सब प्रकार के गुणों से युक्त सूर्य को अपने प्राण से संबंधित करता है। अपि च –

"सरति गच्छति वा सुवति प्रेरयति वा तत्तद् व्यापारेपुकृत्स्नं जगदिति सूर्यः॥"
"तं सूर्ये हरितः सप्तयहवी स्पशं विश्वस्य जगतो वहन्ति (ऋक् – 4.12.3)
"उद्वेति सुभगो विश्वचक्षाः साधारणः सूर्यो मानुषाणाम् ॥"
ऋक् – 7/63/1

यदि सूर्य न हो तो पल भर के लिए भी स्थावर जंगम जगत् अपना अस्तित्व न टिका सके। सूर्य सबका प्राण है।

"आदित्यो वै प्राणः॥ इतना ही नहीं शास्त्रों में सूर्य को सविता कहा गया है। सूर्य को समृद्धि की आत्मा भी कहा गया है।

सूर्य का वैज्ञानिक महत्त्व

वैदिक ग्रंथों में सूर्य की किरणों का वैज्ञानिक महत्त्व भी बहुतायतरूप में वर्णित है। सूर्य की किरणों के बिना जरायुज, अण्डज, स्वेदज एवं उद्भिज मात्र का जीवित रहना असंभव है। क्योंकि इसके बिना प्रर्याप्त ऊष्मा तथा जीवन के लिए आवश्यक वायु और जल भी नहीं मिल सकता है।

कृषि-विज्ञान के अनुसार वर्षा हेतु मेघ के निर्माण के लिए सूर्यज्योति अनिवार्य है।

"आदित्याज्जायते वृष्टिः। आरोग्यं भास्करादिच्छेत्॥"
"अव दिवस्तरयन्ति सप्त सूर्यस्य रश्मयः॥
आपः" समुद्रिया-धारास्ते शव्यमसिस्रसन्॥"
अथर्ववेद – 7.107.1

अर्थात् सूर्य की किरणें सात रंग वाली है, और वे ही किरणें वर्षा का मूल कारण हैं।

मानव-शरीर पंचमहाभूतों-अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी एवं आकाश से बना है। अत: मानव के स्वास्थ्य से इन पंचमहाभूतों का घनिष्ठ संबंध है।

उपर्युक्त महाभूतों में से पार्थिव अग्नि का द्युलोक स्थित सूर्यरूप होने से उसकी सतरंगी किरणें स्वास्थ्य सृजन तथा व्याधि-चिकित्सा संबंधी महत्वपूर्ण घटक है – सूर्य रश्मियों के लाल, नारंगी, पीला, नीला, आसमानी, बैगनी इन सात रंगों के द्वारा बहुत सारे रोगों की चिकित्सा की जाती है। सूर्य-किरणों की तरह पृथ्वी की धातुएँ एवं उपधातुएँ भी सात हैं। रत्नों के रंग भी सात हैं, मनुष्य का शरीर भी सात धातुओं से युक्त है। शरीर की चमड़ी की परतें भी सात हैं। अग्नि की कलाएँ भी सात हैं। अतएव यह समस्त सृष्टि सप्तरश्मिमय है। और इन सात रंगों में शक्ति संजोने का कार्य सूर्य करता है। इसलिए हमारे जीवन में सूर्य का विशेष महत्व है।

और इन्हीं सप्त किरणों द्वारा अथर्ववेद में सूर्य-किरण चिकित्सा पद्धति की व्याख्या की गई है।

"अनु सूर्यमुदयतां हृदद्योतो हरिमा च ते।
गो रोहितस्य वर्णेन तेन त्वा परि दध्मसि॥ "

अथर्व० 1.22.1

"परि त्वा रोहितैवर्णे दीर्घायुत्वाय दध्मसि।
यथाऽयमरवा असदथो अहरितो भुवत्।। "

अथर्व० 1.22.2

अंतत:" भूमि, चन्द्रमा, बुध, शुक्र, मंगल, गुरु और शनि इन सातों ग्रहों और लोकों में या भू, भुव:, स्व: आदि सातों भुवनों में प्रकाश पहुँचानेवाले और इन सभी लोकों से रसादि लेने वाली सूर्य किरणें ही है।

वैदिक सूर्य-विज्ञान की इन बातों के परिप्रेक्ष्य में आधुनिक विज्ञानवेत्ताओं ने भी उभय-विज्ञानों के समन्वय का प्रयास किया है। जैसे –

1) सूर्य का व्यास 8,80,000 मील है। अर्थात् यह पृथ्वी से लगभग 110 गुना बड़ा है।
2) समस्त सौर-मंडल के ग्रहों के भार से सूर्य का भार एक हजार गुना अधिक है।
3) सूर्य से पृथ्वी की दूरी 9 करोड़ 70 लाख मील है।
4) सूर्य की किरणों को पृथ्वी तक पहुँचने में 8 मिनट 18 सेकेण्ड का समय लगता है।
5) सूर्य की आयु लगभग 6 अरब वर्ष है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक साहित्य में सूर्य अपने-आप में स्वयं एक विज्ञान है, जिनकी वैज्ञानिकता के महत्त्व का कोई अंत नहीं।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि सूर्य-मानव जीवन का आधार है। पृथ्वीवासी जीवों को हमेशा प्रकाश देनेवाला, चेतना से भर देने वाला प्राण और पोषण देनेवाला, रोगों का उपचार करने वाल सूर्यदेव बहुत महान है। यही कारण है कि सूर्य के विषय में कहा गया है – "ज्योतिषां ज्योतिरेक:"। तथा सूर्य में एक विशेष प्रकार की प्राकृतिक शक्ति है जो निरंतर प्रज्जवलित रहती है। और जब तक सृष्टि है, तब तक प्रज्जवलित रहेगी।

संदर्भ – ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद - 1.115.1
2. यजुर्वेद - 18.40
3. अथर्ववेद - 19.8.1, 19.8.2
4. मत्स्य पुराण - 124.7
5. निरूक्त - 2 अध्याय
6. गोपथ - ब्राह्मण
7. ऋक् - 10.22.14, 9.114.3, 4.13.3, 7.63.1
8. यजुर्वेद - 23.10
9. अथर्ववेद - 7.107.1, 1.22.1, 1.22.2